Volume-5, Issue-8, August-2018 ISSN: 2349-7637 (Online)

RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)

Research Paper

Available online at: www.rhimrj.co.in

समकालीन हिन्दी कविता के परिदृश्य में समकालीन कवि और और काव्यों में आधुनिक संवेदना के विविध आयाम

डॉ0 हसीना बानो

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभागाध्यक्ष, हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद।

समकालीन कविता पर जब हम विचार करते हैं तो सबसे पहले यही समस्या खड़ी हो जाती है कि हम समकालीन कविता से क्या समझें? इसकी शुरूआत कहां से करें और आज इसी विचार विमर्श हेतु हम यहां एकत्रित हुए है यूं तो इसका सिलसिला सन् 1980 के आसपास सम्भावित दिखता है। कुछ अतीत से जुड़े हुए पृष्ठभूमि चार–पांच पीढ़ियों के कुछ 15–16 कविताओं के संग्रह प्रकाशित हुए थे जिनकी जोरदार चर्चा ने हिन्दी काव्य के परिदृश्य में हलचल मचाते हुए गतिमान कर दिया था। जिसके फलस्वरूप कविता की वापसी, कलावाद, प्रगतिशील कविता अपने चरम सीमा पर पत्र पत्रिकाओं के कविता विशेषांक में कविता सम्बधी लेख, टिप्पणियां, संगोष्ठी, समारोह का आयोजन शुरू हो गया था। सन् 1971–72 के पहले तो कुछ आन्दोलन अवश्य दिखते है पर 1980 के बाद समकालीन कविता में कोई आन्दोलन प्रायोजित नहीं होता।

यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाये तो यह बात सच है कि धूमिल, कुमार विकल, विजयेन्द्र कुमारेन्द्र पारसनाथ और वेणु गोपाल की युवा कविता ने समकालीन कविता की एक स्वस्थ पृष्ठभूमि तैयार की है। समकालीन हिन्दी कविता की प्रवाहित होने वाली मुख्य धारा यथार्थवाद की धारा है जिसका विरोध समूची आधुनिक दृष्टि से नहीं बल्कि एक संकीर्ण ढर्रे के आधुनिकतावाद से है जिसे प्रगतिशील यथार्थवादी काव्यधारा के विरुद्ध संगठित किया गया है। समकालीन कविता यथार्थवाद की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति है। जो विषयवस्तु, शैली, भाषा को, अपने समय की सच्चाई को, यथार्थवाद को, अर्न्तलीन कर अपनी पहचान बनाई है। इसीलिए समकालीनता और हिन्दी कविता पर भिन्न–भिन्न दृष्टियों से विचार करना अभीष्ट है। सन् 1960 के बाद आज तक की कविता को समकालीन कविता के कालखण्ड में बांधा जा रहा है और जो समकालीन कविता का काल खण्ड है वाह व्यापक रूप से बढ़ता ही जा रहा है। जिसका कोई काव्यान्दोलन नहीं हुआ और न ही परिभाषित किया गया है। हाँ 1960 के हिन्दी कविता में पानी के बुलबुलों की तरह छोटे अल्प जीवी काव्यान्दोलन होते रहे जैसे– अकविता, सहज कविता, विद्रोही कविता, भूखी पीढ़ी की कविता, शमशानी पीढ़ी कविता। इन आन्दोलनों से जुड़े कलाकारो, कवियों ने अपनी कुण्ठाओं, अतृप्त इच्छाओं, कामनाओं, वासनाओं, निषेधात्मक मूल्यों को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त करके पूरे साहित्यिक परिवेश को गन्दा, घिनौना और घृणास्पद बना दिया। ऐसी अश्लील रचनायें निर्भय मालिक, राजकमल चौधरी माणिका मोहिनी की कविताओं में देखी जा सकती है। अश्लील चिन्तन को ही काव्य का विषय बनाया जा रहा था। सन् 1967 में नक्सलबाड़ी के प्रसिद्ध किसान विद्रोह ने एक तहलका मचा दिया, जनवादी संघर्ष की लपटें दूर–दूर तक फैल गयी, हर व्यक्ति को अपना पक्ष चुनने के लिये विवश कर दिया। यहां तक जनवादी ताकतों को राजनीतिक चेतना से जुड़ने के लिये विवश किया संसदीय जनतन्त्र, गणतन्त्र और व्यवस्था से टकराव से ही इन कवियों को ताकत मिली। नक्सलबाड़ी आन्दोलन ने हिन्दी ही नहीं वरन् समूची भारतीय कविता को प्रभावित किया। इसी समय पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल में गैर कांग्रेसी सरकारें बनी। इन तमाम संवेदनात्मक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप कुछ ऐसे रचनाकारों ने विशाल जनता की ज़िन्दगी का साक्षात्कार कर के अपनी संवेदनात्मक दृष्टि से जनवादी समकालीन कविता का सृजन किया। ऐसे कवियों में अज्ञेय मुक्तिबोध, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, केदारनाथ, रघुवीर सहाय, शमशेर बहादुर सिंह धूमिल, लीलाधर जगूड़ी, गोरखपाण्डेय, अरुणकमल आदि उभर कर सामने आये।

समकालीन जनवादी कविता ही जनता की ज़िन्दगी के बीच से पनपते हुए, उगते हुए सूरज की तलाश करता है जो उसकी आशाओं, आकांक्षाओं, विद्रोही संघर्षो, स्वप्नों को वाणी देती है। यह सामन्तवाद विरोधी काव्य है। जो अपना स्वरूप सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्थितियों और चुनौतियों के अनुरूप बदलता रहता है। जब मेहनत करने वालों को खून–पसीना बहाकर उत्पादन करने वालों की अपनी क्षुदा, अपनी भूख मिटाने को भरपूर मजदूरी नहीं मिलती, जहां हत्या, बलात्कार, चोरी, डकैती की पूरी आजादी है। कपड़ा बनाने वाले नंगे घूमते है तो कहीं मकान बनाने वाले के पास अपने रहने के लिये झोपड़पट्टी तक नहीं है, राजनीतिक व्यवस्था पार्टियों का वर्चस्व भयावह रूप से जनता की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करता नजर आ रहा है। साम्प्रदायिक दंगे, जातीयता का बोलबाला, खुले आम अपनी अस्मिता को प्रकट करता दिखाई दे रहा है। इसी व्यापक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए डॉ0 कंवरपाल सिंह लिखते हैं जनवाद का वास्तविक अर्थ है– साम्राज्यवाद, पूंजीवाद, सामंती व्यवस्था और उसके जीवन मूल्यों का सक्रिय विरोध, श्रमिक वर्ग और पीड़ित जन के साथ वास्तविक हमदर्दी। देश भक्त क्रान्तिकारी शक्तियों की एकता और उसके संकल्प का नाम है जनवाद और जनवाद का उद्देश्य है साम्राज्यवादी, पंजीवादी और सामंती व्यवस्था के स्थान पर जनता के प्रजातन्त्र की स्थापना। साहित्य के क्षेत्र में यही शोषित उत्पीड़ित वर्ग की भावनाओं, संकल्पों, दुःखों और संघर्षो की यथार्थ अभिव्यक्ति का नाम जनवाद है। जनवादी साहित्य जनता को शिक्षित कर उसके संघर्षो और जीवन मूल्यों को नवीन प्रेरणा देता हुआ आगे बढ़ता है।

इसलिए समकालीन कवियों साहित्यकारों का दायित्व बनता रहा और बनता रहेगा। ऐसी भाषा जो संवेदनात्मक दृष्टि को उत्पन्न करे और कवि साहित्यकार तभी समर्थ उत्तराधिकारी कहला सकता है। जो मानवता, सभ्यता राष्ट्र की धरोहर संस्कृति को बचा सकें, समन्वयता स्थापित कर सके, अखण्डता को बना सके। घुटते हुए दमन की चक्की में पिसते हुए, लहुलुहान होते हुए अपने अधिकरों के लिये संघर्ष करते हुए मुक्ति के लिये व्याकुल यथार्थ जीवन का चित्रण हो जो शोषित जनता के मन में विश्वास जगाता हो और शोषकों के मनोबल तोड़ देता है। ऐसी समकालीन कविता का बोध आधुनिक संवेदना का विविध आयाम प्रस्तुत करता है। समकालीन विविध समस्याओं विचारों और प्रश्नों के प्रति गरिमामयी वाणी का प्रयोग समकालीन हिन्दी काव्यों में पूरी तरह से उपलब्ध हैं जब कवि के हृदय का ताप बढ़ जाता है, अनुभूतियां दहकने लगती है तब उसके सृजन की छवियां उसकी सृजन धर्मिता उसकी अपनी पहचान बना देती है।

हिन्दी काव्य के इतिहास का अवलोकन किया जाये तो प्राचीन कवियों चाहे तुलसीदास हो या कबीर दोनों के भिन्न संस्कारों और जीवन शैली भिन्न होने के बावजूद अपने युग की प्रभुत्व शक्ति को चुनौती देते हैं। कबीर आज की प्रासंगिकता में समकालीन और आधुनिक ही दिखाई पड़ते है।

समकालीन कविता का आरम्भिक इतिहास बनाने वाले कवियों में अज्ञेय के विरुद्ध मुक्तिबोध को रखते हुए हम देख सकते हैं कि ''व्यक्ति'' दोनों के यहां महत्वपूर्ण है पर मुक्तिबोध का ''व्यक्ति'' वही नहीं है जो अज्ञेय का है। मुक्तिबोध सामाजिक चिन्ता के कवि हैं पर व्यक्ति चिन्ता के समूचे गहरे बोध के साथ ''समाज'' भी त्रिलोचन की कविता में वहीं नहीं हैं जो नागार्जुन की कविता में है। त्रिलोचन के यहां ''समाज'' की गतिविधि को पकड़ने की कोशिश अधिक शान्त और आत्म चेतस है जबकि ''समाज'' की गतिविधि नागार्जुन की कविताओं में अधिक उग्र है उत्तेजक है। रघुवीर की कविताओं में जीवन को देखने का ढंग वहीं नहीं है जो केदारनाथ सिंह का है।

आधुनिकता का असली रूप सामने आ जाने के बाद ही सम्भव हो सका कि समकालीनता के परिदृश्य में निराला के कृतित्व से नागार्जुन, मुक्तिबोध, त्रिलोचन की कविता का सीधा सम्बन्ध समझ सके। आधुनिकता के पक्ष में कई स्तरों पर संघर्ष भी उन्हें महत्वपूर्ण बनाता है इसलिये कवि रूप में अनेक सहज आधुनिक संवेदनात्मक महत्व के अवमूल्यन किये बगैर उनकी कलात्मक, सृजनात्मक, संवेदनात्मक दृष्टिकोण से मानदण्ड सीमाओं को स्पष्ट करना जरूरी है। इस काव्यात्मक संघर्ष के लिये आधुनिकता के संश्लिष्ट विवेक के आधार पर अज्ञेय, मुक्तिबोध, नागार्जुन, केदारनाथ त्रिलोचन सर्वेश्वर आदि का काव्य संसार देखा जा सकता है।

अज्ञेय ने हिन्दी कविता को नया मुहावरा दिया और कविता की एक विशेष शैली को संगठित रूप में प्रतिष्ठित करने के लिये संघर्ष भी किया। जिसके फलस्वरूप उनके द्वारा चलाये गये काव्य सम्प्रदाय में नव रहस्यवाद तथा अमूर्त

कलावाद के रूप में हुई। धूमिल ने स्वनिर्मित काव्यात्मक उत्तेजना के साथ ''संसद से सड़क तक'' प्रस्थान किया इस दौर की कविता को ''युवा कविता'' जैसी संज्ञा मिला तो इसके पीछे भी धूमिल के अपने काव्य मुहावरे की बड़ी भूमिका है जिसका श्रेय उन्हीं को प्राप्त है। उनके काव्य मुहावरे ने प्रतिबद्ध कविता की पहचान बनायी जिसने मानवीय स्थिति को राजनीतिक शब्दावली में प्रकट करने का एक कारगर ढंग विकसित किया। धूमिल के बाद के कवियों में कुमार विकल एक ऐसे कवि दिखाई दिये जिनकी अपनी रूढ़ियां भी नहीं बनी और जो दूसरों की बनायी हुई रूढ़ियों से भी मुक्त रहे। और आगे चलकर रघुवीर सहाय और केदारनाथ सिंह काव्य ऊर्जा, आधुनिक संवेदना का प्रमाण देते है। नागार्जुन की कविता की एक अपनी अलग स्थिति है उनकी कविता आधुनिकता उसके प्रतिभानों को चुनौती देने वाली कविता है साथ ही साथ वह लोक चेतना सम्पन्न आधुनिक दृष्टि की पहचान बनाने वाली कविता है। कला की तमाम युक्तियों चुनौती, कसौटियों का ध्वस्त करती नागार्जुन की कविता का एक अपना कलात्मक संवेदनात्मक अनुशासन भी है। जनोन्मुख संवेदना और सहज स्वाभाविक लोक धर्मिता के कारण नागार्जुन की कविता ने एक महत्वपूर्ण पहचान बनाई है। यह वह समय था जब कविता के सामाजिक आयाम सिकुड़ते चले जा रहे थे और उसका स्थान रूपवाद ले रहा था जो निराशा, कुण्ठा, हताशा, अजनबीपन जैसे अभिप्रायों की कलात्मक संवेदनात्मक अभिव्यक्ति ही सार्थक हो सकती थी ऐसे में नागार्जुन की कविता सड़क, बाजार, नुक्कड़, मैदानों में पहुंचकर कविता का सामाजिक संवेदन सामने उभर कर आया। उनकी कविता एक नये आस्थावान से परिचित कराती हैं '' पछाड़ दिया मेरे आस्तिक ने '' कविता कृत्रिम आधुनिकता पर व्यंग करने के उद्देश्य से ही लिखी गयी है। अकेलेपन की हाय–हाय के विरुद्ध नागार्जुन कहते हैं–

मैं न अकेला कोटि–कोटि है मुझ जैसे तो
सबको अपना–अपना दुःख है वैसे तो
पर दुनियां को नरक ही नहीं रहने देंगे हम

''पुरानी जूतियों का कोरस''

इस प्रकार उनकी कविता पूंजीवादी व्यवस्था राजनीति को चुनौती देने वाली कविता है। मनुष्य को विभाजित करने वाली व्यवस्था पर सीधे दबाव डालने वाली कविता है। वह सामन्ती संस्कारों के दम्भ की खिल्ली उड़ाने वाली कविता है। जब व्यंग लिखते हैं तब भी लोक जीवन से उनका गहरा सम्यक दिखाई पड़ता है। जन समस्याओं के प्रति इतनी चिन्ता प्रदर्शित करने वाला कोई दूसरा कवि आधुनिक कविता में नहीं है। नागार्जुन समग्र जीवन व्यापार को उसकी द्वन्द्वात्मकता में अर्थ विवेक के साथ परखने वाले और उसे एक उत्तेजक भाषा देने वाले कवि है। उनमें सजग आधुनिक दुष्टि भी है जो नयी संवेदना का साक्ष्य प्रस्तुत करती है।

समकालीन हिन्दी कविता में भाषा का अधिकतम साधन और सृजनात्मक रूप है जब भाषा स्वयं बचाव की मनोदशा में हो तो कविता को सुरक्षित रखना संस्कृति के लिए बहुत बड़ी चुनौती हो जाती है। यह दबाव समकालीन कविता में कई रूपों में दिखते हैं एक तो सपाटबयानी वृत्ति दूसरे व्यंग की मुद्रा यह विचार जटिल है सिर्फ सपाट बयानी या व्यंग ''आयरनी'' के माध्यम से सम्भव नहीं है। इसके लिए कवि को अपनी भाषा में मूलतः निष्ठा रखनी चाहिए। साधारण भाषा में साधारण अनुभूति की पहचान करनी है। असाधारणता अथवा विशिष्टता न भाषा में है न अनुभूति में वह है उसकी पहचान में जो उन दोनों की अंतर–प्रक्रिया में बनती है। आज समकालीन कविता की दशा पर विचार न केवल प्रासंगिक है बल्कि आवश्यक है कि रचना समस्याओं का सीधा समाधान नहीं होता और यदि कहीं होता है तो रचनाकार के अन्तर्मन में। अशोक बाजपेयी अपने आलोचनात्मक लेखन में बहुत बार सपाट बयानी की वकालत करते हैं पर स्वयं उनकी अपनी कविता वैसी ही संशिलिष्ट और बिम्बधर्मी जैसी रघुवीर सहाय और शमशेर की।

समकालीनता और हिन्दी कतिवा पर विहंगम दृष्टि डालने के पश्चात कुछ समकालीन कवियों के काव्य में निहित आधुनिक संवेदना को देखना समीचीन है।

समकालीनता पर धूमिल ने विचार प्रकट किये है–

समकालीन की सुरक्षा के लिए
आदमी लड़ता था समय से
और निचोड़ता था संसार को।।

समकालीनता का दूसरा उदाहरण निराला और मुक्तिबोध की कवितायें हैं। हमारी रोजमर्रा की ज़िन्दगी–पूंजी टेक्नोलॉजी और बाजार से घिरी हुई है। भारतीय समाज में पूंजी के आगमन की पहचान निराला की भिन्न पंक्तियों में दिखाई देता है–

भेद कुल खुल जाये वह सूरत हमारे दिल में है।
देश को मिल जाये जो पूंजी तुम्हारी मिल में है।

और यही पूंजीवादी मूल्यों का विरोधी स्वर मुक्तिबोध में तीखेपन के साथ अभिव्यक्त होता है जो आज पहले से अधिक समकालीन हैं ''अंधेरे'' में शीर्षक कविता में– ''कहीं आग लग गयी, कहीं गोली चल गयी'' की बार–बार आवृत्ति पूंजीवादी व्यवस्था के दमन तन्त्र की ओर संकेत करती है।

समकालीन कवि लोक और लोक संस्कृति की प्रवाहित धारा से जोड़ता है पूंजीवादी के विशाल तन्त्र की साजिशों, संरचनाओं और जटिलताओं के रहस्य को पहचान कर इस जाल में फंसे आदमी को निकालने की कोशिश करता है। साहित्य की सामाजिक भूमिका को चुनौती के तौर पर स्वीकार करके समकालीन कवियों ने अपनी कविता से जन चेतना को जागरुक करने की धारदार बनाने की कोशिश की है।

अगर हम युवा कविता पर विचार करें तो पहले कवि धूमिल आते हैं। हिन्दी कविता में उनके प्रवेश को ऐतिहासिक गौरव प्राप्त हुआ है।

धूमिल की प्रसिद्ध रचना ''मोचीराम'' को ले मोची एक जाति है इसलिए मोचीराम को हम जीवित और पहचाने जा सकने वाले ''मानव चरित्र'' के रूप में नहीं मान सकते है। हां धूमिल द्वारा उसमें विचार वलयित्र चरित्र है। क्योंकि मोचीराम वही करता है, वही बोलता है और वही सोचता है जो धूमिल चाहते है। जबकि हम धूमिल की कविताओं से गुजरते है तो ऐसे सशक्त यथार्थ प्रमाण मिलते हैं जिनमें उनके किसानी संस्कार, उनके ठेठपन, उनकी अखण्डता या बेबाकपन में दिखती है। लेकिन इससे कहीं ज्यादा साक्ष्य उनके जागरुक नागरिक बोध संवेदना में है। ''पटकथा'' भी आधुनिक संवेदना का जीता जागता रूप उपस्थित करता है।

पटकथा सामाजिक हलचल जो सभी भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन आजादी की प्राप्ति प्रजातान्त्रिक और शासन व्यवस्था नेहरु का दृष्टिकोण चीनी आक्रमण, पाकिस्तान से युद्ध, आजाद भारत में मानवता की पिघलती हुई संस्कृति ग्राम्य और नगरीय परिवेश की समस्या, आदमी की विवशता, संसद में विवाद की स्थिति, हिन्दुस्तान का स्वरूप नैतिक मूल्य के अनेक दृश्यों को कई सर्गो में वर्णित लम्बी कविता है। आजादी से लेकर चौथे आम चुनाव तक धूमिल के स्वप्न में वह ''पटकथा'' के रूप में चित्रित हुई है। इस पटकथा की शुरूआत कवि ने यथार्थ से जूझते हुए अभाव ग्रस्त दुःखी–बीमार कवि की विवशताओं से होता है जो कल तक एक शब्द मात्र था वह खून के सूख जाने पर काले अंधकार के दवा की शीशी का एक ट्रेडमार्क बनकर रहा गया है–

जब मैं बाहर आया
मेरे हाथों में
एक कविता थी और दिमाग में
आंतो का एक्स–रे
वह काला धब्बा
जो कल तक एक शब्द था

2015, RHIMRJ, All Rights Reserved

खून के अन्धेरे में
दवा की शीशी का ट्रेडमार्क
बन गया था।

सह कविता आधुनिक संवेदनात्मक दृष्टि का जो रूप उपस्थित करती है शायद ही हम उससे मुंह मोड़ सके। धुमिल की कविताओं में ऐसे संवेदन परिदृश्य उमड़कर सामने आते हैं जिन में सहज आक्रोश क्रांति के स्वर गूंजते है। अपने युग के अभाव ग्रस्त, शोषित, पीड़ित क्षोभ सामाजिक कुण्ठा दुर्व्यवस्था का नग्न यथार्थ चित्र प्रस्तुत कर व्यंगात्मक प्रहार किया है। व्यक्तिगत जीवन में भोगे हुए पहलुओं के कटु अनुभवों अपने काव्य की पैनी दृष्टि से देखा और परखा और उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकने का दृढ़ संकल्प लिया।

इन्होंने सामाजिक, आर्थिक और वैयक्तिक विडम्बनाओं को उभारने के लिए सामाजिक और राजनीतिक परिवेश का गहराई से अध्ययन किया जिसे व्यक्ति करने के लिये राजनीति की भाषा और संवेदना की भाषा को एक साथ ग्रहण किया, जिससे नया अर्थ नयी भाषा का रूप सामने आया।

संदर्भित सूची–

1. समकालीन कविता का यथार्थ – डॉ0 परमानन्द श्रीवास्तव
2. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
3. हिन्दी काव्य का इतिहास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
4. हिन्दी साहित्य का अभिनव इतिहास – डॉ0 वशिष्ठ अनून
5. नयी कविता का सामाजिक पक्ष – डॉ0 लालता प्रसाद सक्सेना
6. कविता के नये प्रतिमान – नामवार सिंह
7. हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी – नन्द दुलारे बाजपेयी
8. मुक्तिबोध स्वप्न और संघर्ष – कृष्ण मोहन
9. भाषा और संवेदना – रामस्वरूप चतुर्वेदी
10. कौमुदी (हिन्दी परिषद पत्रिका 2006–2007) – प्रणयकृष्ण, सूर्य नारायण
11. अज्ञेय सृजन की समग्रता – राम कमल राय
12. छायावाद के आधार स्तम्भ – डॉ0 हरिचरण शर्मा
13. नयी कविता और अस्तित्ववाद – राम विलास शर्मा
14. नयी कविता : काव्य एवं विमर्श – डॉ0 अरुण कुमार

2015, RHIMRJ, All Rights Reserved